



National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177

NJHSR 2026; 1(68): 120-126

© 2026 NJHSR

www.sanskritarticle.com

श्री अम्बिकेश

सहायक प्राध्यापक,

विशेष शिक्षा विभाग (श्रवण बाधिता),

महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय,
जयपुर राजस्थान.

Correspondence:

श्री अम्बिकेश

सहायक प्राध्यापक,

विशेष शिक्षा विभाग (श्रवण बाधिता),

महात्मा ज्योति राव फूले विश्वविद्यालय,
जयपुर राजस्थान.

भारतीय श्रवण बाधित बच्चों में पठन-लेखन के प्रमुख परिणाम, बाधाएँ और प्रभावी शिक्षण पद्धतियाँ: एक संरचित साहित्य समीक्षा

श्री अम्बिकेश

सारांश (Abstract)

पठन एवं लेखन कौशल बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धियों, सामाजिक सहभागिता और स्वतंत्र अधिगम के आधारभूत घटक हैं। श्रवण बाधित बच्चों में इन कौशलों का विकास भाषा तक पहुँच, शब्दावली, व्याकरण, प्रारंभिक साक्षरता अनुभव, शिक्षण पद्धतियों तथा विद्यालय में उपलब्ध संप्रेषण सहायता से प्रभावित हो सकता है। भारतीय संदर्भ में बहुभाषिकता, भारतीय सांकेतिक भाषा (Indian Sign Language—ISL), मौखिक संप्रेषण आधारित शिक्षण, विशेष शिक्षकों की उपलब्धता और समावेशी विद्यालयों में सुलभ शैक्षणिक सामग्री की भूमिका विशेष महत्व रखती है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य श्रवण बाधित बच्चों के पठन एवं लेखन परिणामों का विश्लेषण करना, प्रमुख शैक्षणिक बाधाओं की पहचान करना तथा प्रभावी शिक्षण पद्धतियों की समीक्षा करना है। अध्ययन के लिए संरचित साहित्य समीक्षा का दृष्टिकोण अपनाया गया है, जिसमें श्रवण बाधिता संबंधी साक्षरता शोध, भारतीय शैक्षिक नीतियों और विशेष शिक्षा संसाधनों पर विचार किया गया है। उपलब्ध साहित्य से संकेत मिलता है कि स्पष्ट शब्दावली शिक्षण, दृश्य सहायता, अनुकूलित कहानी-वाचन, संवादात्मक लेखन, पाठ-बोध गतिविधियाँ और बच्चे की भाषायी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण साक्षरता विकास में उपयोगी हो सकते हैं। हालाँकि, शिक्षण पद्धतियों की प्रभावशीलता बच्चों की आयु, भाषा, शैक्षणिक स्तर और संप्रेषण माध्यम के अनुसार भिन्न हो सकती है। भारतीय संदर्भ में अधिक गुणवत्तापूर्ण हस्तक्षेप अध्ययनों, मानकीकृत मूल्यांकन उपकरणों तथा दीर्घकालिक शोध की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द: श्रवण बाधिता, पठन कौशल, लेखन कौशल, भारतीय सांकेतिक भाषा, साक्षरता विकास, समावेशी शिक्षा, विशेष शिक्षा।

प्रस्तावना (Introduction)

शिक्षा मानव विकास, सामाजिक सहभागिता, आत्मनिर्भरता तथा समान अवसरों की प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा के माध्यम से बच्चे ज्ञान, कौशल, चिंतन क्षमता और सामाजिक व्यवहार का विकास करते हैं। पठन एवं लेखन कौशल शैक्षणिक अधिगम के आधारभूत घटक हैं, क्योंकि इनके माध्यम से विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों को समझते हैं, सूचनाओं का विश्लेषण करते हैं, अपने विचार व्यक्त करते हैं तथा विभिन्न विषयों में ज्ञान अर्जित करते हैं। श्रवण बाधित बच्चों के संदर्भ में पठन एवं लेखन का विशेष महत्व है, क्योंकि लिखित भाषा तक प्रभावी पहुँच उनकी शैक्षणिक प्रगति, संप्रेषण क्षमता और स्वतंत्र अधिगम को समर्थन प्रदान कर सकती है।

श्रवण बाधिता एक ऐसी स्थिति है जो बच्चों के श्रवण अनुभवों और बोली जाने वाली भाषा तक पहुँच को अलग-अलग स्तरों पर प्रभावित कर सकती है। हालाँकि, श्रवण बाधिता को बौद्धिक अक्षमता के

समान नहीं माना जाना चाहिए। श्रवण बाधित बच्चों की भाषायी एवं शैक्षणिक उपलब्धियाँ उनकी प्रारंभिक भाषा तक पहुँच, श्रवण बाधिता की प्रकृति, सहायक उपकरणों की उपलब्धता, सांकेतिक भाषा या मौखिक भाषा के अनुभव, पारिवारिक वातावरण तथा विद्यालय में प्राप्त शैक्षणिक सहयोग के अनुसार भिन्न हो सकती हैं। इसलिए उनके पठन एवं लेखन कौशल का अध्ययन करते समय व्यक्तिगत विशेषताओं के साथ-साथ सामाजिक, भाषायी और शैक्षिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक है।

पठन कौशल केवल अक्षरों और शब्दों की पहचान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शब्दार्थ समझना, वाक्य संरचना का विश्लेषण करना, अनुच्छेद का मुख्य विचार पहचानना, पूर्वज्ञान से संबंध स्थापित करना तथा पाठ के आधार पर निष्कर्ष निकालना भी शामिल है। इसी प्रकार लेखन कौशल में शब्दों की सही वर्तनी, व्याकरणिक संरचना, वाक्य निर्माण, विचारों का तार्किक संगठन और स्वतंत्र लिखित अभिव्यक्ति शामिल हैं। पठन एवं लेखन परस्पर संबंधित कौशल हैं, लेकिन इनका विकास हमेशा समान गति से नहीं होता। कोई विद्यार्थी लिखित शब्दों को पहचान सकता है, फिर भी उनके अर्थ को समझने या अपने विचारों को व्यवस्थित अनुच्छेद में व्यक्त करने में कठिनाई अनुभव कर सकता है।

श्रवण बाधित बच्चों में पठन एवं लेखन से संबंधित चुनौतियों को समझने के लिए भाषा-अधिगम की भूमिका पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। लिखित भाषा की समझ शब्दावली, व्याकरण, वाक्य संरचना और अर्थपूर्ण भाषायी अनुभवों से संबंधित होती है। जिन बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से सुलभ भाषा और संवाद के पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं, उन्हें भाषा एवं साक्षरता कौशल विकसित करने के लिए बेहतर आधार मिल सकता है। इसके विपरीत, भाषा तक सीमित पहुँच, अपर्याप्त शैक्षणिक सहायता और अनुपयुक्त शिक्षण सामग्री कुछ बच्चों के लिए अधिगम में बाधाएँ उत्पन्न कर सकती हैं। Luckner et al. (2006) ने श्रवण बाधित बच्चों की साक्षरता संबंधी उपलब्ध शोध की समीक्षा में शोध-पद्धतियों की विविधता और प्रमाण-आधारित निष्कर्षों के महत्व को रेखांकित किया। यह दृष्टिकोण इस विषय में व्यवस्थित और गुणवत्तापूर्ण शोध की आवश्यकता को स्पष्ट करता है।

भारतीय संदर्भ में श्रवण बाधित बच्चों की साक्षरता का अध्ययन विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि भारत एक बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक देश है। विभिन्न राज्यों में बच्चों की घरेलू भाषा, विद्यालय का शिक्षण माध्यम तथा लिखित भाषा की आवश्यकताएँ अलग-अलग हो सकती हैं। हिंदी, अंग्रेजी, मराठी और अन्य भारतीय भाषाओं में पढ़ने-लिखने के लिए विशिष्ट शब्दावली, व्याकरण और

भाषा संरचना का ज्ञान आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, भारतीय सांकेतिक भाषा (Indian Sign Language—ISL) अनेक श्रवण बाधित बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण संप्रेषण माध्यम है। सांकेतिक भाषा में उपलब्ध भाषायी अनुभवों को लिखित भाषा के शिक्षण से जोड़ना उपयोगी हो सकता है, बशर्ते शिक्षक दोनों भाषाओं की संरचनात्मक विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट निर्देश प्रदान करें।

विद्यालयी वातावरण भी पठन एवं लेखन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेष विद्यालयों और समावेशी विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षण संसाधन, शिक्षक प्रशिक्षण, कक्षा में संप्रेषण की सुगमता, दृश्य सामग्री तथा व्यक्तिगत शैक्षिक सहायता बच्चों की सहभागिता को प्रभावित कर सकते हैं। यदि पाठ्यपुस्तकों की भाषा अत्यधिक जटिल हो, आवश्यक शब्दों की व्याख्या न की जाए या शिक्षक बच्चे की संप्रेषण आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण न करें, तो पाठ-बोध और लिखित अभिव्यक्ति में कठिनाइयाँ बढ़ सकती हैं। इसलिए प्रभावी शिक्षण के लिए दृश्य सहायता, चित्र-आधारित गतिविधियों, अनुकूलित कहानी-वाचन, स्पष्ट शब्दावली शिक्षण, संवादात्मक लेखन और चरणबद्ध मूल्यांकन का उपयोग किया जा सकता है।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समावेशी शिक्षा, सुलभ शिक्षण सामग्री, सहायक तकनीक तथा दिव्यांग बच्चों की शैक्षणिक सहभागिता को महत्व देती है (Ministry of Education, 2020)। इसी प्रकार दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों और शिक्षा में समान अवसरों से संबंधित वैधानिक आधार प्रदान करता है। इन नीतिगत प्रावधानों का प्रभावी क्रियान्वयन तभी संभव है जब विद्यालय बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण सामग्री, संप्रेषण सहायता, उपयुक्त मूल्यांकन और प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था करें। केवल नीतियों का अस्तित्व पर्याप्त नहीं है; उनकी विद्यालयी स्तर पर प्रभावशीलता का अध्ययन भी आवश्यक है।

यद्यपि श्रवण बाधित बच्चों के भाषा एवं साक्षरता विकास पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शोध उपलब्ध है, फिर भी भारतीय भाषायी और शैक्षिक संदर्भ में विभिन्न शिक्षण पद्धतियों की प्रभावशीलता, पठन-बोध के मूल्यांकन, स्वतंत्र लेखन के विकास और शिक्षक प्रशिक्षण के परिणामों पर अधिक व्यवस्थित शोध की आवश्यकता है। विशेष रूप से यह समझना महत्वपूर्ण है कि सांकेतिक भाषा समर्थित शिक्षण, दृश्य सामग्री, अनुकूलित कहानी-वाचन और संवादात्मक लेखन किस प्रकार अलग-अलग आयु समूहों तथा शैक्षणिक परिस्थितियों में उपयोगी हो सकते हैं। इसके लिए बच्चों की व्यक्तिगत

विशेषताओं, विद्यालय के प्रकार और शिक्षण माध्यम को ध्यान में रखते हुए गुणवत्तापूर्ण अध्ययन किए जाने चाहिए।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भारतीय श्रवण बाधित बच्चों के पठन एवं लेखन कौशल के प्रमुख परिणामों का विश्लेषण करना, उनके विकास में आने वाली भाषायी, शैक्षणिक और पर्यावरणीय बाधाओं की पहचान करना तथा प्रभावी शिक्षण पद्धतियों की समीक्षा करना है। यह अध्ययन विशेष शिक्षा और समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों, शोधकर्ताओं तथा नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। अध्ययन का व्यापक उद्देश्य ऐसी शैक्षणिक परिस्थितियों को प्रोत्साहित करना है जिनमें श्रवण बाधित बच्चों को अर्थपूर्ण भाषा अनुभव, सुलभ शिक्षण सामग्री और स्वतंत्र रूप से पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसर प्राप्त हों।

शोध समस्या (Statement of the Problem)

पठन एवं लेखन कौशल बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि, भाषायी विकास, स्वतंत्र अधिगम और सामाजिक सहभागिता के आधारभूत घटक हैं। श्रवण बाधित बच्चों के लिए इन कौशलों का विशेष महत्व है, क्योंकि लिखित भाषा के माध्यम से वे पाठ्यपुस्तकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं, शैक्षणिक निर्देशों को समझते हैं तथा अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त करते हैं। इसके बावजूद, कुछ श्रवण बाधित बच्चों को शब्दावली, व्याकरण, वाक्य संरचना, पाठ-बोध, वर्तनी और स्वतंत्र लेखन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इन कठिनाइयों को केवल श्रवण बाधिता का प्रत्यक्ष परिणाम मानना उचित नहीं है, क्योंकि बच्चों की उपलब्धियाँ भाषा तक पहुँच, प्रारंभिक शैक्षणिक अनुभवों, पारिवारिक सहयोग, संप्रेषण माध्यम और विद्यालय में उपलब्ध शिक्षण सहायता से भी संबंधित होती हैं। भारतीय शैक्षिक संदर्भ में श्रवण बाधित बच्चों की पठन-लेखन संबंधी आवश्यकताएँ विविध हैं। कुछ बच्चे मौखिक भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करते हैं, कुछ भारतीय सांकेतिक भाषा (Indian Sign Language—ISL) का उपयोग करते हैं, जबकि कुछ बच्चे विभिन्न संप्रेषण माध्यमों के संयोजन से सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, हिंदी, अंग्रेज़ी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की संरचना और शिक्षण माध्यम में अंतर बच्चों के लिखित भाषा-अधिगम को प्रभावित कर सकता है। इसलिए सभी बच्चों के लिए एक जैसी शिक्षण पद्धति अपनाने के बजाय उनकी भाषायी पृष्ठभूमि, वर्तमान कौशल और व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण प्रदान करना आवश्यक है।

विद्यालयों में उपलब्ध शिक्षण संसाधन और शिक्षक प्रशिक्षण भी इस समस्या के महत्वपूर्ण पक्ष हैं। यदि कक्षा में दृश्य सामग्री, सुलभ पाठ्यपुस्तकें, उपयुक्त संप्रेषण सहायता और स्पष्ट भाषा शिक्षण

उपलब्ध नहीं हैं, तो विद्यार्थियों के लिए पाठ का अर्थ समझना तथा विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करना कठिन हो सकता है। इसी प्रकार, यदि मूल्यांकन केवल वर्तनी, शब्द पहचान या मौखिक उत्तरों पर केंद्रित हो, तो विद्यार्थियों की वास्तविक पाठ-बोध क्षमता और स्वतंत्र लिखित अभिव्यक्ति का पर्याप्त आकलन नहीं हो पाता।

यद्यपि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 समावेशी शिक्षा तथा दिव्यांग बच्चों की शैक्षणिक भागीदारी के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं, फिर भी नीतिगत उद्देश्यों को कक्षा-स्तर पर प्रभावी शिक्षण में बदलने के लिए उपयुक्त संसाधनों, शिक्षक प्रशिक्षण और नियमित मूल्यांकन की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में यह जानना आवश्यक है कि श्रवण बाधित बच्चों के पठन एवं लेखन विकास में कौन-से प्रमुख कारक बाधा उत्पन्न करते हैं तथा कौन-सी शिक्षण रणनीतियाँ उनकी साक्षरता संबंधी आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा कर सकती हैं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख शोध समस्या भारतीय श्रवण बाधित बच्चों में पठन एवं लेखन कौशल के प्रमुख परिणामों का विश्लेषण करना, उनके अधिगम में उपस्थित भाषायी, शैक्षणिक और पर्यावरणीय बाधाओं की पहचान करना तथा उपलब्ध साहित्य के आधार पर प्रभावी एवं संदर्भानुकूल शिक्षण पद्धतियों की उपयोगिता का अध्ययन करना है। यह अध्ययन विशेष रूप से इस बात पर विचार करता है कि दृश्य शिक्षण, अनुकूलित कहानी-वाचन, स्पष्ट शब्दावली शिक्षण, संवादात्मक लेखन और भारतीय सांकेतिक भाषा समर्थित गतिविधियों को बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप किस प्रकार उपयोग में लाया जा सकता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. श्रवण बाधित बच्चों के पठन एवं लेखन कौशल के प्रमुख परिणामों का विश्लेषण करना।
2. पठन-बोध, शब्दावली और व्याकरण संबंधी चुनौतियों की पहचान करना।
3. लेखन में वर्तनी, वाक्य निर्माण, विचार संगठन और स्वतंत्र अभिव्यक्ति की कठिनाइयों का अध्ययन करना।
4. साक्षरता विकास को प्रभावित करने वाले भाषायी, पारिवारिक और विद्यालयी कारकों का विश्लेषण करना।
5. दृश्य शिक्षण, भारतीय सांकेतिक भाषा समर्थित गतिविधियों और संवादात्मक लेखन की उपयोगिता की समीक्षा करना।
6. समावेशी शिक्षा में पठन-लेखन शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्न

1. श्रवण बाधित बच्चों में पठन कौशल के प्रमुख परिणाम और कठिनाइयाँ कौन-सी हैं?

2. लेखन कौशल के विकास में शब्दावली और व्याकरण की क्या भूमिका है?
3. भाषा तक प्रारंभिक पहुँच और संप्रेषण माध्यम साक्षरता विकास से किस प्रकार संबंधित हैं?
4. भारतीय विद्यालयों में पठन-लेखन शिक्षण की प्रमुख बाधाएँ क्या हैं?
5. कौन-सी शिक्षण पद्धतियाँ बच्चों की पठन-बोध और लिखित अभिव्यक्ति को समर्थन दे सकती हैं?

संबंधित साहित्य की समीक्षा

1. श्रवण बाधित बच्चों के पठन एवं लेखन कौशल पर उपलब्ध साहित्य भाषा-अधिगम, शब्दावली, व्याकरण, पाठ-बोध और प्रभावी शिक्षण रणनीतियों के महत्व को रेखांकित करता है।
2. Luckner et al. (2006) ने श्रवण बाधित बच्चों की साक्षरता से संबंधित उपलब्ध शोध का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन ने इस क्षेत्र में प्रमाण-आधारित शिक्षण और शोध की गुणवत्ता के महत्व को रेखांकित किया। इस साहित्य से यह समझ विकसित होती है कि शिक्षण पद्धतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते समय प्रतिभागियों की विशेषताओं, अध्ययन की पद्धति तथा साक्षरता मापन के तरीकों पर ध्यान देना आवश्यक है। केवल किसी एक अध्ययन के परिणाम के आधार पर सभी बच्चों के लिए समान शिक्षण रणनीति की अनुशंसा करना उचित नहीं है।
3. Subramanya और Upadhyay (2026) ने पूर्व-विद्यालय स्तर के श्रवण बाधित बच्चों में अनुकूलित कहानी के माध्यम से सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशलों का अध्ययन किया। यह अध्ययन प्रारंभिक साक्षरता विकास में कहानी-आधारित गतिविधियों की उपयोगिता को समझने के लिए प्रासंगिक है।
4. Subramanya और Upadhyay (2026) ने पूर्व-विद्यालय स्तर के श्रवण बाधित बच्चों में अनुकूलित कहानी के माध्यम से सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने के कौशलों का अध्ययन किया। यह अध्ययन प्रारंभिक साक्षरता विकास में कहानी-आधारित गतिविधियों की उपयोगिता को समझने के लिए प्रासंगिक है। उपलब्ध साहित्य से संकेत मिलता है कि दृश्य शिक्षण, स्पष्ट शब्दावली शिक्षण, अनुकूलित कहानी-वाचन, भारतीय सांकेतिक भाषा समर्थित गतिविधियाँ और संवादात्मक लेखन बच्चों के पठन-लेखन विकास में सहायक हो सकते हैं। हालाँकि, भारतीय संदर्भ में इन पद्धतियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए अधिक व्यवस्थित और अनुभवजन्य शोध की आवश्यकता है।

भारतीय सांकेतिक भाषा और लिखित भाषा

भारतीय सांकेतिक भाषा श्रवण बाधित बच्चों के लिए एक महत्वपूर्ण दृश्य संप्रेषण माध्यम है। जिन बच्चों को ISL में पर्याप्त भाषायी पहुँच प्राप्त है, उनके लिए सांकेतिक भाषा में अवधारणाओं की चर्चा के

बाद लिखित हिंदी या अंग्रेज़ी से संबंध स्थापित करना उपयोगी शिक्षण विकल्प हो सकता है।

हालाँकि, सांकेतिक भाषा और लिखित भाषा की व्याकरणिक संरचनाएँ समान नहीं होतीं। इसलिए शिक्षकों को लिखित भाषा की विशिष्ट संरचनाओं, शब्दावली और वाक्य निर्माण को स्पष्ट रूप से सिखाना चाहिए। इस प्रकार सांकेतिक भाषा का उपयोग अवधारणाओं को समझने और विचार व्यक्त करने के माध्यम के रूप में किया जा सकता है।

समावेशी शिक्षा और पाठ्यक्रम अनुकूलन

भारत सरकार के समावेशी शिक्षा संसाधन शिक्षकों को पाठ्यक्रम अनुकूलन, सुलभ सामग्री और वैकल्पिक शिक्षण रणनीतियों पर विचार करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी दिव्यांग बच्चों की सहभागिता और सुलभ शिक्षा को महत्व देती है।

इन नीतिगत दिशाओं का प्रभावी क्रियान्वयन तभी संभव है जब शिक्षक कक्षा में सुलभ संप्रेषण, दृश्य सहायता और व्यक्तिगत शैक्षिक लक्ष्यों का उपयोग करें। नीति और व्यवहार के बीच संबंध का मूल्यांकन करने के लिए विद्यालय-आधारित शोध की आवश्यकता है।

शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत लेख संरचित साहित्य समीक्षा के प्रारूप में विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य श्रवण बाधित बच्चों के पठन-लेखन विकास से संबंधित प्रमुख विषयों, शिक्षण रणनीतियों और शोध-अंतराल को व्यवस्थित करना है। इसमें कोई नया प्राथमिक सर्वेक्षण या प्रयोगात्मक डेटा प्रस्तुत नहीं किया गया है।

औपचारिक समीक्षा में ERIC, Scopus, Web of Science, Google Scholar, Shodhganga तथा NCERT के संबंधित प्रकाशनों में खोज की जा सकती है। प्रस्तावित खोज शब्दों में “deaf children”, “hearing impairment”, “reading comprehension”, “written expression”, “literacy intervention”, “Indian Sign Language” और “India” शामिल होंगे।

समावेशन मानदंडों में श्रवण बाधित बच्चों, पठन-लेखन कौशल या साक्षरता हस्तक्षेपों से संबंधित अध्ययन शामिल किए जा सकते हैं। ऐसे स्रोतों को बाहर रखा जाना चाहिए जिनमें साक्षरता परिणामों से संबंधित जानकारी न हो, जो दोहराए गए रिकॉर्ड हों या जिनकी पद्धति का पर्याप्त विवरण उपलब्ध न हो।

अंतिम समीक्षा में प्रत्येक अध्ययन के लेखक, वर्ष, देश, नमूना, आयु, संप्रेषण माध्यम, शोध अभिकल्प, हस्तक्षेप, मापन उपकरण और परिणाम दर्ज किए जाने चाहिए। इसके बाद विषयगत विश्लेषण द्वारा निष्कर्षों को पठन, लेखन, भाषा-अधिगम, शिक्षण पद्धतियों और विद्यालयी बाधाओं के अंतर्गत व्यवस्थित किया जा सकता है।

पद्धतिगत सीमा: इस लेख में वास्तविक डेटाबेस खोज और स्क्रीनिंग की सत्यापित संख्या उपलब्ध नहीं है। इसलिए इसे पूर्ण PRISMA

2020 systematic review नहीं माना जाना चाहिए। प्रकाशन से पहले वास्तविक खोज, रिकॉर्ड निष्कासन, पूर्ण-पाठ स्क्रीनिंग और अध्ययन-गुणवत्ता मूल्यांकन पूरा करना आवश्यक होगा।

पठन कौशल के प्रमुख परिणाम

शब्द पहचान और शब्दावली

शब्द पहचान पठन का आधार है, लेकिन शब्द को पहचानना और उसका अर्थ समझना अलग-अलग क्षमताएँ हैं। बच्चे किसी परिचित शब्द को पढ़ सकते हैं, फिर भी उसका संदर्भगत अर्थ समझने में कठिनाई अनुभव कर सकते हैं।

शब्दावली विकसित करने के लिए चित्र, वस्तुएँ, संकेत, उदाहरण और संदर्भ-आधारित गतिविधियों का उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक को नए शब्दों का अर्थ, वाक्य में प्रयोग और संबंधित अवधारणाओं से उनका संबंध स्पष्ट करना चाहिए।

वाक्य संरचना और व्याकरण

कुछ श्रवण बाधित बच्चों को लिखित भाषा में काल, क्रिया-रूप, सर्वनाम, विभक्ति और छोटे व्याकरणिक शब्दों के प्रयोग के लिए अतिरिक्त शिक्षण की आवश्यकता हो सकती है। यह कठिनाई सभी बच्चों में समान नहीं होती।

शिक्षक उदाहरण प्रस्तुत करके, वाक्यों की तुलना कराकर, शब्दों को सही क्रम में व्यवस्थित करवाकर और स्वतंत्र वाक्य निर्माण का अभ्यास देकर इन कौशलों को विकसित कर सकते हैं।

पाठ-बोध

पाठ-बोध में मुख्य विचार पहचानना, घटनाओं का क्रम समझना, कारण-परिणाम संबंधों की पहचान और निष्कर्ष निकालना शामिल है। बच्चों को पाठ पढ़ने से पहले महत्वपूर्ण शब्दों से परिचित कराना, चित्रों पर चर्चा करना और पाठ के बाद प्रश्न पूछना उपयोगी हो सकता है।

मूल्यांकन में केवल मौखिक उत्तरों पर निर्भर रहने के बजाय बच्चे की संप्रेषण आवश्यकताओं के अनुसार लिखित, चित्र-आधारित या संकेत-समर्थित उत्तरों की अनुमति दी जा सकती है। मूल्यांकन का प्रारूप इस प्रकार चुना जाना चाहिए कि वह वास्तव में मापे जा रहे कौशल को प्रतिबिंबित करे।

स्वतंत्र पठन

स्वतंत्र पठन विद्यार्थियों को अपनी क्षमता के अनुसार पाठ से जानकारी प्राप्त करने में सहायता करता है। उपयुक्त कठिनाई स्तर की पुस्तकें, चित्रयुक्त सामग्री, दृश्य शब्दकोश और सुलभ डिजिटल पाठ इसके लिए उपयोगी संसाधन हो सकते हैं।

यदि पाठ्य सामग्री में अत्यधिक जटिल भाषा या अपरिचित शब्द हैं, तो विद्यार्थी विषय-वस्तु समझने में कठिनाई अनुभव कर सकता है। इसलिए पाठ की सुलभता सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।

लेखन कौशल के प्रमुख परिणाम

विचार निर्माण और अभिव्यक्ति

लेखन में विचार उत्पन्न करना, उन्हें व्यवस्थित करना और उचित शब्दों के माध्यम से व्यक्त करना शामिल है। चित्र-आधारित कहानी, विचार-मानचित्र और शब्द-सूची विद्यार्थियों को लिखने से पहले योजना बनाने में सहायता दे सकते हैं।

वर्तनी और लिखित शब्दावली

वर्तनी संबंधी त्रुटियों का मूल्यांकन करते समय यह देखना आवश्यक है कि विद्यार्थी शब्द का अर्थ और लिखित संरचना समझता है या नहीं। शब्द कार्ड, व्यक्तिगत शब्दकोश और संदर्भ-आधारित अभ्यास उपयोगी हो सकते हैं।

केवल गलत शब्द को बार-बार लिखवाने के बजाय उसके अर्थ और वाक्यगत प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए।

वाक्य निर्माण और व्याकरण

लेखन में वाक्य क्रम, क्रिया-रूप, काल, विभक्ति और अन्य व्याकरणिक संरचनाओं से संबंधित कठिनाइयाँ हो सकती हैं। शिक्षण में उदाहरण, वाक्य पूरा करने की गतिविधियाँ, त्रुटि सुधार और स्वतंत्र लेखन को क्रमशः शामिल किया जा सकता है।

अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद लेखन के लिए विचारों का तार्किक क्रम, विषय-वाक्य, संबंधित विवरण और निष्कर्ष आवश्यक हैं। विद्यार्थियों को योजना बनाना, प्रारूप तैयार करना, संशोधन करना और अंतिम लेखन प्रस्तुत करना सिखाया जाना चाहिए।

मूल्यांकन में विषय-वस्तु, संगठन, व्याकरण, वर्तनी और अभिव्यक्ति को अलग-अलग आयामों के रूप में देखना अधिक उपयोगी है।

पठन-लेखन विकास की प्रमुख बाधाएँ

भाषा तक सीमित पहुँच: प्रारंभिक भाषा अनुभवों की कमी कुछ बच्चों के लिए शब्दावली और व्याकरण सीखने के अवसरों को सीमित कर सकती है। बच्चों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सुलभ संप्रेषण माध्यम उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है।

सीमित शब्दावली: अपरिचित शब्दों की अधिकता पाठ-बोध को कठिन बना सकती है। पढ़ने से पहले आवश्यक शब्दों और अवधारणाओं की स्पष्ट व्याख्या उपयोगी होती है।

शिक्षण सामग्री की कमी: अत्यधिक जटिल पाठ, अपर्याप्त दृश्य सहायता और कठिन निर्देश सीखने में बाधाएँ उत्पन्न कर सकते हैं। सामग्री को सुलभ बनाना आवश्यक है, लेकिन इससे शैक्षणिक अपेक्षाओं को अनुचित रूप से कम नहीं किया जाना चाहिए।

शिक्षक प्रशिक्षण: सामान्य शिक्षकों को श्रवण बाधिता, सुलभ संप्रेषण और दृश्य शिक्षण के बारे में पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए। विशेष एवं सामान्य शिक्षकों के बीच सहयोग की कमी से शिक्षण की निरंतरता प्रभावित हो सकती है।

परिवार और विद्यालय का समन्वय: घर पर कहानी, चित्र-पुस्तकें और दैनिक अनुभवों से संबंधित संवाद साक्षरता विकास को समर्थन दे सकते हैं। परिवारों को उनकी आवश्यकताओं और संसाधनों के अनुरूप मार्गदर्शन देना चाहिए।

मूल्यांकन संबंधी सीमाएँ: केवल मौखिक उत्तर या वर्तनी पर निर्भर मूल्यांकन बच्चों की वास्तविक पाठ-बोध और विचार-अभिव्यक्ति क्षमता को पूरी तरह नहीं दर्शा सकता। उपयुक्त वैकल्पिक मूल्यांकन आवश्यक है।

प्रभावी शिक्षण पद्धतियाँ

भारतीय सांकेतिक भाषा समर्थित शिक्षण

जिन बच्चों के लिए ISL उपयुक्त संप्रेषण माध्यम है, उनके लिए संकेतों के माध्यम से अवधारणाओं पर चर्चा करने के बाद लिखित भाषा का अभ्यास कराया जा सकता है। उदाहरण के लिए, कहानी के पात्रों और घटनाओं पर ISL में चर्चा के बाद विद्यार्थी प्रमुख शब्द और वाक्य लिख सकते हैं।

दृश्य एवं बहुसंवेदी शिक्षण

चित्र, वस्तुएँ, चार्ट, शब्द कार्ड, मॉडल और डिजिटल सामग्री अवधारणाओं को स्पष्ट करने में सहायक हो सकते हैं। दृश्य सामग्री को स्पष्ट शिक्षण उद्देश्य से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि वह केवल सजावट न बने।

अनुकूलित कहानी-वाचन

कहानी-वाचन के दौरान शिक्षक पहले चित्रों और पात्रों का परिचय दे सकते हैं, फिर प्रमुख शब्दों का अर्थ समझाकर कहानी को छोटे भागों में प्रस्तुत कर सकते हैं। इसके बाद विद्यार्थियों से घटनाओं का क्रम बनवाना, कहानी का सार प्रस्तुत करवाना और स्वतंत्र लेखन गतिविधि कराना उपयोगी हो सकता है।

संवादात्मक लेखन

संवादात्मक लेखन में शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर किसी विषय पर लिखते हैं। विद्यार्थी अपने विचार प्रस्तुत करते हैं और शिक्षक उन्हें व्यवस्थित करने, उचित शब्द चुनने तथा वाक्य बनाने में सहायता करते हैं। बाद में विद्यार्थी स्वतंत्र लेखन का अभ्यास करते हैं।

निर्देशित पठन

निर्देशित पठन में पाठ का चयन विद्यार्थी के स्तर के अनुसार किया जाता है। शिक्षक मुख्य विचार पहचानने, घटनाक्रम समझने, शब्दार्थ स्पष्ट करने और निष्कर्ष निकालने में सहायता करते हैं। इससे पठन को अर्थपूर्ण प्रक्रिया के रूप में विकसित किया जा सकता है।

तकनीक-सहायित शिक्षण

कैप्शनयुक्त वीडियो, दृश्य शब्दकोश, डिजिटल कहानी, लेखन सॉफ्टवेयर और सुलभ डिजिटल पाठ उपयोगी साधन हो सकते हैं। तकनीक का चयन बच्चों की भाषा, उपलब्ध संसाधनों और वास्तविक शैक्षणिक आवश्यकता के आधार पर किया जाना चाहिए।

व्यक्तिगत शिक्षण योजना

प्रत्येक बच्चे के लिए मापनीय पठन-लेखन लक्ष्य निर्धारित किए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए, मुख्य विचार पहचानना, चित्रों के आधार पर क्रमबद्ध वाक्य लिखना, नए शब्दों का सही प्रयोग करना और स्वतंत्र लेखन में सुधार करना। नियमित मूल्यांकन के आधार पर लक्ष्यों और शिक्षण रणनीतियों में परिवर्तन किया जा सकता है।

भारतीय शैक्षिक नीतियों से संबंध

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 समावेशी शिक्षा, सुलभ सामग्री, सहायक तकनीक और दिव्यांग बच्चों की सहभागिता को महत्व देती है। Rights of Persons with Disabilities Act, 2016 दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों और शिक्षा से संबंधित वैधानिक आधार प्रदान करता है।

इन प्रावधानों को विद्यालय स्तर पर लागू करने के लिए आवश्यकतानुसार संप्रेषण सहायता, सुलभ पाठ्य सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण, मूल्यांकन अनुकूलन और परिवार के साथ सहयोग सुनिश्चित करना चाहिए।

नीतिगत प्रावधानों की उपस्थिति अपने आप प्रभावी क्रियान्वयन का प्रमाण नहीं है। इसके लिए विद्यालयों में उपलब्ध सुविधाओं, शिक्षण प्रक्रियाओं और विद्यार्थियों के वास्तविक परिणामों का अध्ययन आवश्यक है।

चर्चा (Discussion)

साहित्य समीक्षा से यह समझ विकसित होती है कि श्रवण बाधित बच्चों की साक्षरता को केवल शब्द पहचान या उच्चारण के आधार पर नहीं आँकना चाहिए। शब्दावली, पाठ-बोध, व्याकरण और स्वतंत्र विचार-अभिव्यक्ति को भी समान रूप से महत्व देना आवश्यक है।

दृश्य सहायता, अनुकूलित कहानी-वाचन, संवादात्मक लेखन और स्पष्ट भाषा शिक्षण बच्चों को लिखित भाषा तक पहुँच प्रदान करने के संभावित साधन हैं। हालाँकि, इन रणनीतियों का चयन बच्चों की भाषायी पृष्ठभूमि, आयु और वर्तमान कौशल के अनुरूप किया जाना चाहिए।

भारतीय संदर्भ में प्रमुख शोध-अंतरालों में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में मानकीकृत मूल्यांकन, ISL समर्थित साक्षरता हस्तक्षेपों का परीक्षण, विशेष और समावेशी विद्यालयों की तुलना तथा शिक्षक प्रशिक्षण के दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन शामिल हैं।

भविष्य के शोध में बड़े और विविध नमूनों, उपयुक्त तुलना समूहों, विश्वसनीय मापन उपकरणों और दीर्घकालिक अनुवर्ती अध्ययन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

13. शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षकों को पठन और लेखन के लिए स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए तथा बच्चों को अर्थपूर्ण संवाद और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के पर्याप्त अवसर देने चाहिए। विशेष शिक्षकों को व्यक्तिगत भाषा आवश्यकताओं और वर्तमान साक्षरता स्तर के आधार पर योजनाएँ विकसित करनी चाहिए।

विद्यालय प्रशासन को सुलभ सामग्री, सहायक तकनीक, शिक्षक प्रशिक्षण और सहयोगात्मक शिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए। परिवारों को दैनिक जीवन, चित्र-पुस्तकों और कहानी के माध्यम से अर्थपूर्ण भाषा अनुभव उपलब्ध कराने में सहयोग दिया जा सकता है। नीति-निर्माताओं को भारतीय भाषाओं में मूल्यांकन उपकरणों के विकास, विशेष शिक्षक प्रशिक्षण और विद्यालय-आधारित हस्तक्षेप शोध को प्रोत्साहित करना चाहिए।

14. अध्ययन की सीमाएँ

यह लेख संरचित साहित्य समीक्षा का प्रारूप है और इसमें कोई नया प्राथमिक डेटा प्रस्तुत नहीं किया गया है। सभी डेटाबेस में वास्तविक खोज, पूर्ण-पाठ स्क्रीनिंग और गुणवत्ता मूल्यांकन की पुष्टि के बिना इसे पूर्ण PRISMA systematic review नहीं कहा जा सकता।

साक्षरता संबंधी परिणाम बच्चों की आयु, भाषा, श्रवण स्तर, संप्रेषण माध्यम और शैक्षिक वातावरण के अनुसार भिन्न हो सकते हैं। इसलिए अंतरराष्ट्रीय साहित्य से प्राप्त निष्कर्षों को भारतीय परिस्थितियों में लागू करते समय स्थानीय भाषायी और शैक्षिक संदर्भ को ध्यान में रखना चाहिए।

15. निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय श्रवण बाधित बच्चों के पठन एवं लेखन कौशल का विकास भाषा तक पहुँच, शब्दावली, व्याकरण, शिक्षण सामग्री की सुगम्यता और विद्यालयी सहयोग सहित अनेक कारकों से संबंधित है। बच्चों की कठिनाइयों को केवल व्यक्तिगत सीमाओं के रूप में देखने के बजाय उनके भाषायी अनुभवों और शैक्षणिक अवसरों के संदर्भ में समझना आवश्यक है।

अनुकूलित कहानी-वाचन, दृश्य शिक्षण, स्पष्ट शब्दावली शिक्षण, संवादात्मक लेखन, निर्देशित पठन और व्यक्तिगत शिक्षण योजनाएँ साक्षरता विकास के लिए उपयोगी विकल्प हो सकती हैं। भारतीय सांकेतिक भाषा तक उपयुक्त पहुँच रखने वाले बच्चों के लिए सांकेतिक भाषा समर्थित गतिविधियों को लिखित भाषा शिक्षण से जोड़ना भी महत्वपूर्ण है।

फिर भी किसी एक शिक्षण पद्धति को सभी बच्चों के लिए समान रूप से प्रभावी नहीं माना जा सकता। भारतीय संदर्भ में गुणवत्तापूर्ण हस्तक्षेप अध्ययनों, मानकीकृत मूल्यांकन उपकरणों और दीर्घकालिक शोध की आवश्यकता बनी हुई है।

अंततः, प्रभावी साक्षरता शिक्षण का लक्ष्य केवल पढ़ने और लिखने की त्रुटियाँ कम करना नहीं, बल्कि प्रत्येक श्रवण बाधित बच्चे को अर्थ समझने, विचार व्यक्त करने, स्वतंत्र रूप से सीखने और शैक्षिक जीवन में समान रूप से भाग लेने के अवसर प्रदान करना होना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. Government of India. (2016). The Rights of Persons with Disabilities Act, 2016 (Act No. 49 of 2016). India Code. <https://www.indiacode.nic.in/>
2. Luckner, J. L., Sebold, A. M., Cooney, J., Young, J., III, & Muir, S. G. (2005). An examination of the evidence-based literacy research in deaf education. *American Annals of the Deaf*, 150(5), 443–456. <https://doi.org/10.1353/aad.2006.0008>
3. Ministry of Education, Government of India. (2020). National education policy 2020. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
4. Ministry of Human Resource Development. (2016). Making inclusion work: A toolkit for master trainers in preparing teachers for inclusive education for children with special needs. Department of School Education and Literacy, Government of India. <https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/publication/module5.pdf>
5. Subramanya, K. R., & Upadhyay, A. K. (2026). Effect of adapted story on developing listening, speaking, reading and writing (LSRW) skills for preschool children with hearing impairments. *Journal of Indian Education*, 50(3), 83–93. <https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/jie/article/view/5067>